

# पनियम - संख्या बीस

दानिय्येल अध्याय 11 का अनुक्रम और 2025 की चेतावनी

Jeff Pippenger

2026-03-02

अग्रदूतों द्वारा इतिहास का वह अनुप्रयोग, जिसने पद 10 से 16 की पूर्ति की थी, यह निरूपित करता है कि रोम—जिसने दर्शन की स्थापना की—200 ईसा-पूर्व में आ पहुँचा; वही वर्ष पैनियम के युद्ध का भी था, और मेरा सुझाव है कि 2025 में रोम आया और ट्रंप तथा पोप लियो के पदग्रहण के साथ दर्शन की स्थापना की। 2025 वह एकमात्र वर्ष है जब एक पोप और एक राष्ट्रपति का पदग्रहण एक ही वर्ष में हुआ। 2025 में, जो देखने के इच्छुक हैं, उनके लिए पशु और उसकी मूर्ति को ऊँचा उठाया गया। अग्रदूतों के विपरीत, यहाँ पदों की प्रारम्भिक पूर्ति करने वाले इतिहास के स्थान पर स्वयं पदों के क्रम का अनुप्रयोग किया जा रहा है। इतिहास से सहमत होते हुए भी, मेरी पद्धति यह है कि इतिहास की रूपरेखा के लिए पदों के भीतर निहित क्रम को आधार बनाया जाए, न कि पदों की रूपरेखा को परिभाषित करने के लिए इतिहास का उपयोग किया जाए। मेरा प्रतिपादन है कि दोनों दृष्टिकोण समान रूप से सही हैं।

## मक्काबियों की क्रांति

मैं मक्काबियों की रेखा का भी इसी प्रकार अनुप्रयोग करता हूँ। 167 ईसा पूर्व का मक्काबी विद्रोह 200 ईसा पूर्व के पानियम के युद्ध के बहुत बाद और 63 ईसा पूर्व में पोम्पेय द्वारा यरूशलेम पर अधिकार किए जाने से बहुत पहले हुआ था। वह रेखा, जो पद सोलह में 63 ईसा पूर्व सेनापति पोम्पेय द्वारा यरूशलेम की विजय से आरंभ होती है, और यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय राज्य करने वाले तिबेरियुस कैसर तक चलती है। क्रूस और तिबेरियुस अध्याय ग्यारह के पद बाईस में निरूपित हैं।

और बाढ़-समान सैन्यबल के द्वारा वे उसके सामने से बहा दिए जाएँगे, और टूट जाएँगे; हाँ, वाचा का राजकुमार भी। दानिय्येल 11:22.

पद सोलह में 63 ईसा-पूर्व यरूशलेम पर जनरल पोम्पेय की विजय, और पद बाईस में 31 ईस्वी का क्रूस, एक ऐसी भविष्यवाणी-रेखा का निरूपण करते हैं जो रविवार के कानून के एक प्रतीक से आरंभ होकर रविवार के कानून के ही एक प्रतीक पर समाप्त होती है। पद तेईस उस पाठ-क्रम में एक विराम है; अतः पद बाईस, पद सोलह में आरंभ हुई भविष्यवाणी-रेखा का समापन चिह्नित करता है। पद बाईस में उस रेखा का यह विशिष्ट समापन इस तथ्य के साथ संयुक्त है कि पद बाईस, उसी मार्गचिह्न का प्रतीक है जिसका निरूपण पद सोलह में हुआ था; इस प्रकार 'अल्फा और ओमेगा' का साक्ष्य मिलता है कि पद सोलह से बाईस तक एक पृथक् भविष्यवाणी-रेखा का निरूपण होता है।

इसके अतिरिक्त, पद पंद्रह और सोलह सेल्यूसिड राज्य से रोमी सत्ता तक के संक्रमण को चिह्नित करते हैं, और आप देखते हैं कि पद पंद्रह में सेल्यूसिडों से पद सोलह में रोमियों तक सातत्य में एक विच्छेद स्पष्ट होता है, तथा पद सोलह से बाईस तक की रेखा स्पष्ट रूप से एक एकल भविष्यसूचक रेखा के रूप में पृथक है। पद सोलह उस अगली सत्ता का परिचय देता है जो यहूदिया पर प्रभुत्व करेगी, और इस प्रकार यह भविष्यसूचक इतिहास में एक संक्रमण को चिह्नित करता है, ठीक वैसे ही जैसे पद तेईस में। यह रेखा रविवार-विधान के एक प्रतीक के साथ आरम्भ होती और समाप्त होती है, और यह ग्यारहवें अध्याय के बाईसवें पद पर समाप्त होती है।

स्मिथ—और तीन सीज़र

यह तथ्य कि पद सोलह रविवार के विधान का प्रतिनिधित्व करता है, जैसे कि पद बाइस भी, यह अनिवार्य ठहराता है कि इन दोनों पदों को परस्पर समांतर रखकर एक-दूसरे के अनुरूप किया जाए। उरियाह स्मिथ पद तेईस पर टिप्पणी करते हैं, और यह स्पष्ट करते हैं कि वह ऐसा इतिहास क्यों प्रस्तुत करता है जो पूर्ववर्ती पदों के इतिहास में और भी पीछे से आरम्भ हुआ था, इसके विपरीत कि वह पद बाइस के क्रूस के तुरन्त पश्चात् आने वाले इतिहास का प्रतिनिधित्व करता हो।

'पद 23. और उसके साथ संधि होने के बाद वह कपटपूर्वक कार्य करेगा; क्योंकि वह आएगा, और थोड़े लोगों के साथ बलवंत होगा.'

यहां जिस 'उसके' के साथ की गई संधि का उल्लेख है, वह वही शक्ति होनी चाहिए जो चौदहवें पद से भविष्यवाणी का विषय रही है; और यह कि वह रोमी शक्ति है, यह विवाद से परे इस तथ्य से सिद्ध होता है कि, जैसा पहले बताया गया, वह भविष्यवाणी रोमी साम्राज्य पर क्रमशः राज्य करने वाले तीन व्यक्तियों—अर्थात् जूलियस, ऑगस्टस, और तिबेरियुस कैसर—में पूरी हुई। पहला, अपनी भूमि के दुर्ग में विजयी होकर लौटते समय, ठोकर खाकर गिर पड़ा, और फिर न पाया गया। पद 19. दूसरा कर-वसूली कराने वाला था; और उसने राज्य की महिमा में राज्य किया, और न क्रोध में मरा, न युद्ध में, परन्तु अपनी ही शय्या पर शांति से प्राण दिए। पद 20. तीसरा कपटी था, और सबसे निकृष्ट चरित्रों में से एक। वह शांति से राज्य पर आरूढ़ हुआ, परन्तु उसके राज्यकाल और उसके जीवन—दोनों का अंत हिंसा से हुआ। और उसके ही राज्यकाल में वाचा का प्रधान, नासरत का यीशु, क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला गया। पद 21, 22. मसीह को फिर कभी न नष्ट किया जा सकता है, न पुनः मार डाला जा सकता है; अतः न किसी अन्य शासन में, और न किसी अन्य काल में, हम इन घटनाओं की पूर्ति पा सकते हैं। कुछ लोग इन पदों को अन्तियोकुस पर लागू करने का प्रयत्न करते हैं, और यहूदी महायाजकों में से किसी एक को वाचा का प्रधान ठहराते हैं, यद्यपि उन्हें कभी ऐसा नहीं कहा गया। यह उसी प्रकार का तर्क है जो दानियेल 8 के छोटे सींग की पूर्ति अन्तियोकुस के शासनकाल में सिद्ध करने का प्रयत्न करता है; और यह उसी उद्देश्य से प्रस्तुत किया जाता है; अर्थात् उस महान साक्ष्य-शृंखला को तोड़ने के लिए जिसके द्वारा यह दिखाया गया है कि आगमन का सिद्धान्त बाइबल का ही सिद्धान्त है, और यह कि मसीह अब द्वार पर हैं। परन्तु उस साक्ष्य को परास्त नहीं किया जा सकता; उस शृंखला को तोड़ा नहीं जा सकता।

“साम्राज्य की लौकिक घटनाओं के माध्यम से हमें सत्तर सप्ताहों के अंत तक ले आने के पश्चात्, भविष्यद्वक्ता, पद 23 में, हमें उस समय पर वापस ले जाता है जब रोमी यहूदी संधि, 161 ईसा-पूर्व, के द्वारा परमेश्वर की प्रजा के साथ प्रत्यक्ष रूप से संबंधित हुए; जिस बिंदु से आगे फिर हमें घटनाओं की एक सीधी रेखा में कलीसिया की अंतिम विजय और परमेश्वर के अनन्त राज्य की स्थापना तक ले जाया जाता है। यहूदी, सीरियाई राजाओं द्वारा अत्यन्त पीड़ित किए जाने के कारण, रोम के पास एक दूतावास भेजकर रोमियों से सहायता की याचना करने और अपने को उनके साथ 'मैत्री और संघबद्धता की एक संधि में' जोड़ने लगे। 1 Mac.8; Prideaux, II, 234; Josephus's Antiquities, पुस्तक 12, अध्याय 10, खंड 6। रोमियों ने यहूदियों की प्रार्थना सुनी, और उन्हें एक आदेश प्रदान किया, जो इन शब्दों में रचा गया था:—”

'यहूदियों के राष्ट्र के साथ सहायता और मैत्री की संधि के विषय में सीनेट का आदेश। रोमियों के अधिकाराधीन जो कोई हों, उनके लिए यह वैध न होगा कि वे यहूदियों के राष्ट्र के विरुद्ध युद्ध करें, और न ही ऐसा करनेवालों की सहायता करें, चाहे उन्हें अन्न, या जहाज़, या धन भेजकर; और यदि यहूदियों पर कोई आक्रमण किया जाए, तो रोमी अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनकी सहायता करेंगे; और फिर, यदि रोमियों पर कोई आक्रमण किया जाए, तो यहूदी उनकी सहायता करेंगे। और यदि यहूदी इस सहायता की संधि में कुछ जोड़ना या कुछ घटाना चाहें, तो वह रोमियों की सामूहिक सहमति से किया जाएगा। और इस प्रकार जो भी वृद्धि की जाएगी, वह विधिक बलप्राप्त होगी।' 'यह आदेश,' योसेफ़स कहता है, 'योहन के पुत्र यूपोलेमुस और एलेआज़र के पुत्र यासोन द्वारा लिखा गया था, जब यहूदा राष्ट्र का महायाजक था, और उसका भाई शमौन सेना का सेनानायक था। और यह वह पहली संधि थी जो रोमियों ने यहूदियों के साथ की, और इसे इसी प्रकार संपन्न किया गया।'

"उस समय रोमी एक लघु जनसमुदाय थे, और उन्होंने कपटपूर्वक, अथवा कुटिल चातुर्य से—जैसा कि उस शब्द का अर्थ है—कार्य करना आरम्भ किया। और यहीं से वे निरंतर और तीव्र आरोहण के द्वारा शक्ति की उस पराकाष्ठा तक पहुँचे, जिसे उन्होंने आगे चलकर प्राप्त किया।" उरियाह स्मिथ, दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य, 270, 271.

केवल यह ही नहीं कि बाईसवें पद का क्रूस उस रेखा का समापन ऐसे प्रतीक के साथ करता है जो उसी रेखा के आरम्भ में भी उपस्थित है, परन्तु अगला पद क्रूस से पूर्व के इतिहास में लौट जाता है—लगभग पानियम के तीस वर्ष बाद और लगभग उस समय से सौ वर्ष पूर्व जब रोम ने यरूशलेम पर विजय प्राप्त की। यहाँ स्मिथ जिस यहूदियों की संधि के मार्गचिह्न को 161 ईसा-पूर्व ठहराते हैं, उसे अन्य अग्रणी 158 ईसा-पूर्व मानते हैं। मेरा ध्यान यहाँ तिथि पर इतना नहीं है, वरन् इस पर है कि पद सोलह से बाईस तक भविष्यद्वाणीमय इतिहास की ऐसी रेखा प्रस्तुत करते हैं जिसके लिए रविवार का कानून उस रेखा का अल्फा और ओमेगा दोनों है। और जब पद सोलह से बाईस की रेखा प्रतिपादित कर दी जाती है, तो तेइसवाँ पद उन्हीं पदों सोलह से बाईस की रेखा के भीतर के इतिहास को दोहराता और उसका विस्तार करता है। तेइसवें पद द्वारा निरूपित भविष्यद्वाणीमय इतिहास की रेखा मक्काबियों का इतिहास है, और मक्काबियों का इतिहास संयुक्त राज्य अमेरिका के इतिहास के साथ एक परिपूर्ण समांतर है।

## दो राजवंश

मक्काबी उस विद्रोह का प्रतिनिधित्व करते हैं जो एंटियोकस एपिफेनीज़ के शासनकाल में प्रारंभ हुआ और उत्तरी सेल्यूकिड साम्राज्य के विरुद्ध था। इस विद्रोह में प्राप्त विजय ने उस काल के दो यहूदियाई राजवंशों में से एक के उदय का मार्ग प्रशस्त किया, ऐसा काल जो अंततः ईस्वी सन् 70 में यरूशलेम के विनाश तक ले गया। पहला राजवंश हस्मोनी था और दूसरा हेरोदियन। उत्तरी सेल्यूकिड साम्राज्य से मुक्ति के पश्चात हेरोदियन राजवंश यहूदिया का दूसरा शासन था। यह प्रत्यक्षतः रोमी व्यवस्था से संबद्ध था, जबकि पूर्ववर्ती हस्मोनी राजवंश मूलतः यहूदी था। हस्मोनी राजवंश का आरंभ ईसा पूर्व 141 में हुआ, और ईसा पूर्व 37 में हेरोदियन राजवंश प्रारंभ हुआ तथा ईस्वी सन् 70 तक बना रहा।

ये राजवंश यहूदिया के शासन का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो प्राचीन और शाब्दिक अर्थ में महिमामय देश है। मक्काबी विद्रोह 167 से 160 ईसा पूर्व तक चला। 164 ईसा पूर्व में मक्काबियों ने अन्तियुखुस एपिफानेस को यरूशलेम से निकाल दिया और, उसके द्वारा मंदिर के अपवित्र किए जाने के बाद, मंदिर को शुद्ध किया और पुनः समर्पित किया; परन्तु उत्तरी सेल्यूकिड सत्ता केवल 141 ईसा पूर्व में ही पूर्णतः पराजित हुई और तभी हस्मोनी राजवंश का आरम्भ हुआ।

हेरोदियन वंश इस रेखा की एक कुंजी है, क्योंकि यीशु के जन्म के समय शिशुओं को मार डालने का आदेश हेरोदेस महान ने ही दिया था, और जब यीशु की मृत्यु हुई, तब उसका पुत्र राज्य कर रहा था। हेरोदेस महान पिता था, और वह यहूदिया पर राजा था, पर उसका पुत्र केवल एक टेट्राक था, अर्थात् वह राज्य के चौथे भाग पर शासक था—राजा की अपेक्षा एक प्रकार के राज्यपाल के समान। इसी कारण उसके पास वह अधिकार नहीं था; अतः मसीह को क्रूस पर चढ़ाने के लिए उसे पीलातुस से समन्वय करना पड़ा। यीशु का जन्म उनकी भविष्यवाणी की रेखा में 'अंत का समय' था, और उनकी मृत्यु रविवार के कानून का प्रतिनिधित्व करती है। पहला हेरोदेस 1989 का प्रतिनिधित्व करता है, और अंतिम हेरोदेस रविवार का कानून है। पिता हेरोदेस से पुत्र हेरोदेस तक का क्रम ही मसीह की भविष्यवाणी की रेखा है।

मक्काबियों का वंश उस विजयी विद्रोह से आरम्भ होता है जो एक उत्तरी राजा के विरुद्ध किया गया था, जिसने अपने यूनानी रीति-रिवाज, संस्कृति तथा यूनानी धर्म को यहूदियों पर थोप दिया था। हस्मोनी वंश का आरम्भ 1798 का प्रतिनिधित्व करता था। आप पूछेंगे, ऐसा क्यों? यदि एक वंश भविष्यसूचक "अन्त के समय" पर आरम्भ होता है—जैसा कि मसीह के जन्म पर हेरोदियन वंश के साथ था—तो दूसरे वंश का भी भविष्यवाणी की अनिवार्यता के अनुसार वही आरम्भ होना चाहिए। जब हम मसीह के जन्म को "अन्त का समय" मानते हैं, तब दोनों वंश "अन्त के

समय" से ही आरम्भ होते हैं; परन्तु मूर्ख उस "अन्त के समय" से सम्बद्ध मुहर-खुली ज्योति को कभी नहीं देखते।

हमारे समय में, जैसे मसीह के दिनों में, पवित्रशास्त्र का गलत पढ़ना या गलत अर्थ निकालना संभव है। यदि यहूदियों ने गंभीर, प्रार्थनापूर्ण हृदयों से पवित्रशास्त्र का अध्ययन किया होता, तो उनकी खोज का प्रतिफल समय के विषय में सच्चा ज्ञान होता—और केवल समय ही नहीं, वरन् मसीह के प्रकट होने की रीति के विषय में भी। वे मसीह के महिमामय दूसरे प्राकट्य को उनके प्रथम आगमन के साथ नहीं जोड़ते। उनके पास दानियेल की गवाही थी; उनके पास यशायाह और अन्य भविष्यद्वक्ताओं की गवाही थी; उनके पास मूसा की शिक्षा थी; और मसीह तो उनके ठीक मध्य में उपस्थित थे, तथापि वे उनके आगमन के सम्बन्ध में प्रमाण के लिए पवित्रशास्त्र का अन्वेषण करते रहे। और वे मसीह के साथ वही कार्य कर रहे थे, जिनके विषय में भविष्यवाणी की गई थी कि वे करेंगे। वे इतने अंधे हो गए थे कि जानते ही न थे कि वे क्या कर रहे हैं।

और आज, सन 1897 में, बहुत-से लोग वही कार्य कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें पहले, दूसरे और तीसरे स्वर्गदूतों के संदेशों में समाहित परीक्षात्मक संदेशों का अनुभव नहीं हुआ है। ऐसे भी हैं जो यह सिद्ध करने के लिए पवित्रशास्त्र का अन्वेषण कर रहे हैं कि ये संदेश अभी भी भविष्य में हैं। वे इन संदेशों की सत्यता को तो एकत्र कर लेते हैं, परन्तु उन्हें भविष्यवाणी के इतिहास में उनका उचित स्थान नहीं दे पाते। इसलिए ऐसे लोग संदेशों के स्थान-निर्धारण के विषय में लोगों को भ्रमित करने के खतरे में हैं। वे न तो अंत का समय देखते और समझते हैं, और न ही यह कि इन संदेशों को कब समय में स्थापित करना है। परमेश्वर का दिन गुप्त पदचाप के साथ आ रहा है; परन्तु कथित बुद्धिमान और महान पुरुष 'Higher Education' के विषय में प्रलाप कर रहे हैं। वे न तो मसीह के आगमन के चिह्नों को, और न ही संसार के अंत के चिह्नों को जानते हैं। Paulson Collection, 423, 424.

मसीह के जन्म को 'अन्त का समय' ठहराना, और इस प्रकार मक्काबियों की रेखा को अन्तिम दिनों के वर्तमान सत्य के परिप्रेक्ष्य में लाने की कुंजी मानना, उक्त पाठांश के नितांत केंद्र में मसीह को स्थापित करना है; और यही इस बात का भी प्रमाण है कि यह अनुप्रयोग वैध है।

मक्काबियों की रेखा आध्यात्मिक महिमामय देश का निरूपण करती है, और यह निरूपण उस काल से आरम्भ होता है जब महिमामय देश के नागरिक उत्तर के राजा के राजनीतिक और धार्मिक प्रभुत्व से अलग हो जाते हैं। हस्मोनी वंश तक पहुँचाने वाला मक्काबी विद्रोह 1776 का प्रतिनिधित्व करता है, और उत्तर के राजा के विरुद्ध मक्काबियों द्वारा सम्पन्न किया गया विद्रोह क्रान्तिकारी युद्ध का प्रतिनिधित्व करता था। 1776 से 1798 तक के बाईस वर्ष उस मक्काबी विद्रोह का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसने अन्त के समय 1798 में हस्मोनी वंश की स्थापना करवाई; और वह वंश तब तक चलता रहा जब तक अन्त के समय 1989 में हेरोदियन वंश का आरम्भ नहीं हो गया। हेरोदियन वंश ईस्वी सन् 70 में यरूशलेम के विनाश तक चलता रहा।

इतिहास की इस रेखा में जो बात पहचानना महत्वपूर्ण है, वह द्विविध है: यह प्राचीन महिमामय देश का ऐसा निरूपण है जो आधुनिक महिमामय देश का प्रतिरूप है; और यह उस इतिहास-रेखा के भीतर आरंभ होती है जो पद सोलह से आरंभ होती है, जहाँ रोम प्रथम बार महिमामय देश पर विजय प्राप्त करता है, और इस प्रकार उस रेखा के प्रमुख विषय की पहचान कराती है। पद सोलह से पद बाईस तक की रेखा महिमामय देश का प्रतिनिधित्व करती है, और उसका संदर्भ आसन्न रविवार का क्रानून है। यह रेखा आराधकों के दो वर्गों का भी प्रतिनिधित्व करती है, जो दोनों राजवंशीय सरकारों को प्रभावित करते हैं। सद्की संख्या में कम थे, तथापि दोनों राजवंशीय अवधियों में सामान्यतः यहूदी धार्मिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं पर उनका नियंत्रण था। धार्मिक व्यवस्था का संचालन एक याजकत्व द्वारा होता था, और वह याजकत्व भी सद्कियों और फरीसियों, दोनों से प्रभावित था। हस्मोनियन और हेरोदियन शासन, दोनों, फरीसियों और सद्कियों से प्रभावित थे, और ये दोनों राजवंश 1798 से लेकर रविवार के क्रानून तक संयुक्त राज्य की सरकार का प्रतिनिधित्व करते हैं।

फरीसी और सद्की राजनीतिक मतधाराओं के दो दलों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें दासत्व के प्रश्न पर अपने रुख से पहचाना जाता है। डेमोक्रेट दासत्व-समर्थक हैं और रिपब्लिकन दासत्व-विरोधी; और दोनों मिलकर संयुक्त राज्य अमेरिका की संवैधानिक सरकार के राजनीतिक तंत्र के साथ अंतर्क्रिया करते हैं। वह सरकार प्रकाशितवाक्य तेरह का पृथ्वी से निकलनेवाला पशु है, और उस पृथ्वी-पशु का बाह्य इतिहास उसके गणतंत्रवाद के सींग द्वारा निरूपित है। आंतरिक इतिहास उसके प्रोटेस्टेंटवाद के सींग द्वारा निरूपित है। वे सींग उस पशु पर पृथक हैं, क्योंकि वह पशु वही संविधान है जो राज्य के सींग को कलीसिया के सींग से अलग करता है, तथापि वे इतिहास में साथ-साथ बढ़ते चलते हैं। गणतंत्रवाद का सींग दो प्रकार के प्रभावों के अधीन रहता है—या तो दासत्व के पक्ष में या उसके विरोध में। प्रोटेस्टेंटवाद का सींग दो प्रकार के प्रभावों के अधीन रहता है—या तो सातवें दिन के सब्त के पक्ष में या सूर्य के प्रथम दिन के पक्ष में।

पानियम के युद्ध के लगभग तीस वर्ष बाद, मक्काबी संयुक्त राज्य अमेरिका के इतिहास को बाइबिलीय भविष्यवाणी के छठे राज्य के रूप में चिह्नित करते हैं। तत्पश्चात्, लगभग एक शताब्दी बाद, जब यरूशलेम विजित होता है—जो क्रूस का प्रतिरूप ठहरता है—तो पद सोलह की पूर्ति होती है। जब रोम विश्व पर आधिपत्य स्थापित करता है, तब वह जिन तीन बाधाओं को वश में करता है, उनमें यहूदिया दूसरी है। सेनानायक पोम्पेय ने 65 ईसा पूर्व में सीरिया पर, और फिर 63 ईसा पूर्व में यहूदिया पर विजय प्राप्त की। 31 ईसा पूर्व ऐक्टियम के युद्ध में ऑगस्टस कैसर तीसरी बाधा को परास्त करेगा। यह इतिहास पद सोलह से बाईस तक की रेखा में निरूपित है।

क्रूस के समय तक मक्काबियों का इतिहास लगभग दो सौ वर्ष से चलता आ रहा था। उरियाह स्मिथ दर्शाते हैं कि पद तेईस में 'यहूदियों के साथ संधि' द्वारा निरूपित इतिहास को ऐसे ऐतिहासिक आरंभ-बिंदु से संरेखित किया जाना चाहिए जो पद बाईस में क्रूस के इतिहास से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व घटित हुआ था। पद बाईस में क्रूस का इतिहास पद सोलह के साथ संरेखित होना चाहिए, क्योंकि पद सोलह भी 'रविवार के क़ानून' को ही दर्शाता है। इसका अर्थ यह है कि मक्काबियों की काल-रेखा, जो यहूदा के महिमामय देश का इतिहास है, पद सोलह के 'रविवार के क़ानून' से बहुत पहले आरंभ होती है।

जब हम यह समझते हैं कि मिलराइटों का इतिहास एक लाख चवालीस हज़ार के इतिहास का निरूपण करता है, तब हम 1798 में मिलराइटों के अंत के समय को 1989 में एक लाख चवालीस हज़ार के अंत के समय के साथ संरेखित कर सकते हैं। ऐसा करने पर, हम पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के इतिहास को तीसरे स्वर्गदूत के इतिहास पर अध्यारोपित करते हैं। 1798 और 1989, दानिय्येल अध्याय ग्यारह के पद चालीस के इतिहास के अल्फ़ा और ओमेगा मार्गचिह्न हैं।

पद चालीस 'अंत के समय' से आरम्भ होता है, जिसका 1798 होना सरलता से सिद्ध किया जा सकता है; और जब ठीक प्रकार समझा जाए, तो 1989 में सोवियत संघ के पतन से पद चालीस की पूर्ति हुई, और वह पूर्ति भी 'अंत का समय' ही थी। एक ही पद में 'अंत के समय' के दो-दो उल्लेख; और यह उसी अध्याय में है जिसमें मक्काबियों की रेखा आती है। मक्काबी विद्रोह, जो हस्मोनियन वंश तक ले गया, 1776 से 1798 तक के बाईस वर्षों का प्रतिनिधित्व करता है। 1798 में हस्मोनियन वंश आरम्भ हुआ और 1989 में हेरोदियन वंश आरम्भ हुआ।

दानिय्येल अध्याय ग्यारह का दसवां पद 1989 की पहचान करता है, और सोलहवां पद रविवार का कानून है। उन पदों के भीतर की ऐतिहासिक रेखा तीन युद्धों का प्रतिनिधित्व करती है, तथा दक्षिण के एक राजा के पतन और भविष्यवाणीगत इतिहास में रोम के प्रवेश को दर्शाती है। यह उन दो राजवंशों की रेखा को भी समाहित करता है, जो उस परिवर्तन का प्रतिरूप हैं, जो तब घटित होता है जब प्रकाशितवाक्य तेरह का पृथ्वी का पशु, जिसके "मेम्ने के समान दो सींग थे, और" "अजगर के समान वह बोलता था।" क्रमानुसार पहला यहूदी राजवंश मेम्ना है और दूसरा रोमी राजवंश अजगर है। पहला राजवंश यहूदी था, दूसरा रोमी था। चाहे यहूदी हो या रोमी, पृथ्वी के पशु के दो सींग थे।

यहूदी राजवंश प्रोटेस्टेंटवाद के सींग का प्रतिनिधित्व करता है और रोमी राजवंश गणतंत्रीय सींग का। दोनों सींगों में भविष्यवाणीगत द्वि-विभाजन भी निहित है। सदूकी और फरीसी, दासत्व-विरोधी रिपब्लिकनों के विपरीत, दासत्व-समर्थक डेमोक्रेटों की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं; और साथ ही, बुद्धिमान कुँवारियों के विपरीत, मूर्ख कुँवारियों के द्वि-भागी विभाजन का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। मूर्ख कुँवारियों के रूप में फरीसी प्रथम निराशा के समय शुद्ध किए जाते हैं, और सदूकी दूसरी मन्दिर-शुद्धि में शुद्ध किए जाते हैं। फरीसी, सार्दिस की कलीसिया के समान, जीवन का नाम धारण करने का दावा करते थे, परन्तु मृत थे, और पहले शुद्ध किए जाते हैं; फिर सदूकी, जिन्होंने परमेश्वर की सामर्थ्य का इनकार किया, ने मध्यरात्रि की पुकार की सामर्थ्य और संदेश का भी इनकार किया। सदूकी वे वाचा के लोग हैं जिन्हें पार किया जा रहा है; सदूकी वे हैं जो अच्छी भावनाओं के अनुभवों से ही संतुष्ट हो जाते हैं।

पहले स्वर्गदूत के संदेश द्वारा जिस मसीह के आगमन की घोषणा की गई थी, उसे दूल्हे के आने द्वारा प्रतीकित समझा गया। उसके शीघ्र आगमन की घोषणा के अंतर्गत जो व्यापक सुधार हुआ, वह कुँवारियों के निकलने के अनुरूप था। इस दृष्टान्त में, जैसे मत्ती 24 के दृष्टान्त में, दो वर्ग निरूपित किए गए हैं। सबने अपनी दीवटें, अर्थात् बाइबल, ले ली थीं, और उसकी ज्योति से दूल्हे से मिलने को निकल पड़े थे। परन्तु जहाँ 'मूर्खों ने अपनी दीवटें तो ले लीं, पर अपने साथ तेल नहीं लिया,' वहीं 'बुद्धिमानों ने अपनी दीवटों के साथ अपने पात्रों में तेल लिया।' दूसरे वर्ग ने परमेश्वर का अनुग्रह, पवित्र आत्मा की पुनर्जननकारी और प्रकाश प्रदान करने वाली शक्ति, प्राप्त की थी, जो उसके वचन को पाँवों के लिये दीपक और मार्ग के लिये ज्योति बनाती है। परमेश्वर के भय में उन्होंने सत्य जानने के लिये पवित्र शास्त्रों का अध्ययन किया था, और मन तथा जीवन की शुद्धता के लिये मनोयोगपूर्वक खोज की थी। इनके पास व्यक्तिगत अनुभव था, परमेश्वर और उसके वचन पर ऐसा विश्वास, जिसे निराशा और विलंब परास्त नहीं कर सकते थे। अन्यो ने 'अपनी दीवटें तो लीं, पर अपने साथ तेल नहीं लिया।' वे आवेग से प्रेरित होकर चले थे। गंभीर संदेश से उनके भय उत्तेजित हो गए थे, परन्तु वे अपने भाइयों के विश्वास पर निर्भर थे, और सत्य की सम्यक् समझ तथा हृदय में अनुग्रह के वास्तविक कार्य के बिना ही, अच्छी भावनाओं की टिमटिमाती ज्योति से संतुष्ट थे। ये प्रभु से मिलने के लिये, त्वरित प्रतिफल की आशा से परिपूर्ण होकर, निकल तो पड़े थे; पर वे विलंब और निराशा के लिये तैयार न थे। जब परीक्षाएँ आईं, तो उनका विश्वास चूक गया, और उनकी दीवटें मन्द जलने लगीं। *The Great Controversy*, 393.

चाहे राजनीतिक हों या धार्मिक, दोनों वर्ग मध्यरात्रि के संकट में बुद्धिमानों के विरुद्ध एकजुट हो जाते हैं। यह कहने के बाद, हमने लेख की शुरुआत इस बिंदु को उठाकर की कि मैं पद चौदह का अनुप्रयोग पदों के प्रवाह में उसके स्थान के आधार पर कर रहा हूँ, जो कि पदों द्वारा निरूपित ऐतिहासिक अनुक्रम के विपरीत है। मैं उसी तर्क का प्रयोग पद तेईस के स्थान-निर्धारण के साथ सामंजस्य में करता हूँ। किसी पथचिह्न का स्थान-निर्धारण उसकी ऐतिहासिक परिपूर्ति के अनुरूप होना चाहिए। मक्कबी काल में यहूदियों ने रोम के साथ जो संधि की, उसी ने यह निर्धारित किया कि उस पद का अनुप्रयोग कहाँ किया जाएगा। पद चौदह के "लुटेरे", जिन्होंने दर्शन को स्थापित किया, यह कार्य 200 ईसा-पूर्व में—उसी वर्ष जब पनियम का युद्ध हुआ—किया; परंतु वह युद्ध और वे लुटेरे दो भिन्न प्रतीक हैं।

'लुटेरे' वृत्तांत का भाग इसलिए नहीं बनते कि पानीयुम के युद्ध की तिथि के साथ प्रत्यक्ष संबंध स्थापित किया जाए, बल्कि इसलिए कि वे उस संबंध की पहचान कराएँ जो उन्होंने मिस्र के निर्बल पाँच-वर्षीय शासक के साथ बनाया था, जिसे अन्तियोकुस द्वारा पराजित किया जाने वाला था। वे रोमन साम्राज्य में मिस्री गेहूँ के आयात में किसी व्यवधान को नहीं चाहते थे। उस पद का विषय रोम का उस असुरक्षित पाँच-वर्षीय मिस्री राजा के साथ भविष्यसूचक संबंध है। वह मध्यस्थता उन दुष्परिणामों के उपरांत की दशा की पहचान कराती है, जो पुतिन के इस प्रयास के बाद उत्पन्न होते हैं कि यूक्रेनी कलीसिया को, जैसा कि पूर्व में 1989 से पहले था, रूसी कलीसिया के अधीन कर दिया जाए। वह प्रयास उसके दक्षिणी राज्य के क्रमिक पतन का आरम्भ करता है; और जब पुतिन, प्टोलमी की भाँति, मर जाता है, अथवा उज्जिय्याह और नेपोलियन की भाँति किसी प्रकार निर्वासित कर दिया जाता है, तब वह भविष्यसूचक रूप से हटा दिया जाता है, और उसका राज्य तब कम दक्ष नेताओं की एक शृंखला द्वारा संचालित किया जाने लगता है। तब, पाँच-वर्षीय राजा के समय में, पोप-प्रधान रोम अपने हितों की रक्षा के लिए मध्यस्थता करता है, और उसका वह हित यूक्रेनी कलीसिया है।

पापाई सत्ता रूसी या यूक्रेनी रूढ़िवादी कलीसिया में से किसी एक का पक्ष नहीं ले रही है; वह सभी पक्षों को साध रही है ताकि समस्त धार्मिक निकाय उसके अधिकार के अधीन आ जाएँ, जैसा कि यशायाह अध्याय चार में निरूपित है।

और उस दिन सात स्त्रियाँ एक पुरुष को पकड़ लेंगी, और कहेंगी, हम अपनी ही रोटी खाएँगी और अपने ही वस्त्र पहनेंगी; केवल तेरा नाम हम पर कहलाए, ताकि हमारा कलंक दूर हो। उस दिन यहोवा की शाखा सुंदर और महिमामय होगी, और पृथ्वी का फल इस्राएल में से बच निकले हुओं के लिए उत्कृष्ट और रमणीय होगा। और ऐसा होगा कि सिय्योन में जो बचा रहेगा, और यरूशलेम में जो रह जाएगा, वह पवित्र कहलाएगा—यहाँ तक कि यरूशलेम में जीवितों में लिखा हुआ प्रत्येक व्यक्ति। यशायाह 4:1-3.

पापाई सत्ता उन सभी धार्मिक निकायों का नियंत्रण अपने हाथ में ले लेती है, जिनका प्रतिनिधित्व सात स्त्रियों द्वारा किया गया है, अर्थात् सभी कलीसियाएँ। वे सात कलीसियाएँ कैथोलिक—अर्थात् सार्वभौमिक—कहलाना चाहती हैं, और वे स्पष्टतः परमेश्वर की प्रजा नहीं हैं, क्योंकि वे अपना स्वयं का परिधान पहनने का इरादा रखती हैं। अपने स्वयं के मानवीय परिधान पहनना चाहने वाले सभी धार्मिक निकायों का यह एकीकरण उस काल में घटित होता है जब 'येरूशलेम के लोग पवित्र कहलाएँगे'; और वही वह समय है जब प्रभु की शाखा लाओदीकियाई प्रजा से फिलादेल्फियाई प्रजा में रूपान्तरित होती है; और इसी समय पापाई सत्ता सभी धार्मिक निकायों की प्रधान बन जाती है, ठीक उसी समय जब उसे राजनीतिक निकायों की भी प्रधान बनाया जाएगा।

1989 में, यूक्रेनी कलीसिया उत्तर के राजा द्वारा सोवियत संघ को बहा देने का एक प्रतीक थी, और पुतिन पूर्व की अधीनता वाले संबंध को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करेगा, तथा उसके ललाट पर कुछ लग जाएगा और जिस धर्म ने उसकी माँगों को अस्वीकार किया, उसके विरुद्ध उत्पीड़न आरम्भ करेगा। वह उत्पीड़न पटोलमी के अपने देश में, अलेक्जान्द्रिया नगर में, हुआ; अतः रूस के भीतर जो कलीसियाएँ रोम से प्रभावित हैं, वे पुतिन का लक्ष्य बनेंगी, और वही उसका अंत होंगी। जब ट्रम्प पानियम के युद्ध की तैयारी करता है, तो निर्बल मिस्री बाल-राजा के संरक्षक के साथ उसका खुला संबंध 2025 में पहचाना जाता है। 200 ईसा-पूर्व में मिस्री बाल-राजा की रक्षा करने वाली रोमी शक्ति तब बाल-राजा की रक्षा नहीं करेगी। वह बाल-राजा का अंत कराने में सहायता करेगी। 200 ईसा-पूर्व में मिस्र के रक्षक के रूप में रोम, पानियम के युद्ध में मिस्र के संहारक के रूप में रोम का प्रतिनिधित्व करता है।

## मिलरवादी

मिलरवादियों ने तीन रोमी शक्तियाँ नहीं देखीं; उन्होंने केवल दो को देखा, परन्तु उनकी समझ फिर भी सत्य ही थी। प्रतीक के रूप में अन्तियोकुस की भविष्यवाणीगत तर्क-संगति हमें पद चौदह को उस इतिहास में लागू करने की अनुमति देती है जो पद पंद्रह से पूर्व है, यद्यपि जिस इतिहास ने प्रारम्भ में इन पदों की पूर्ति की थी, उसने पद चौदह और पंद्रह दोनों को ईसा-पूर्व 200 वर्ष में ठहराया था। मैं यह दावा कर रहा हूँ कि पद सोलह शीघ्र आने वाला रविवार का कानून है, कि पद चौदह वर्ष 2025 था, और कि पद पंद्रह अभी भविष्य का पानियम का युद्ध है। अन्तियोकुस यह सिद्ध करता है कि ये तीनों युद्ध एक ही भविष्योक्तिपूर्ण रेखा हैं, क्योंकि वह तीनों ही युद्धों में उपस्थित है; साथ ही वह उस दावे की भी पुष्टि करता है जिसे मैं प्रतिपादित कर रहा हूँ—अर्थात्, 'लाइन अपॉन लाइन' कार्यप्रणाली के साथ यथोचित रूप से विभाजन करने पर पदों का अंतकालीन अनुप्रयोग।

एंटीओकस तीनों युद्धों में उपस्थित था; और अन्तिम दिनों में वह 1989 (रीगन और संयुक्त राज्य अमेरिका) तथा 2014 (ज़ेलेन्स्की और यूक्रेन) में पापसत्ता की प्रतिनिधि शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, और पानियम के युद्ध में वह 1989 वाली उसी प्रतिनिधि शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि यीशु सदा आरम्भ के साथ ही अन्त का प्रतिनिधित्व करते हैं। रॉनल्ड रीगन का देहावसान हो चुका है और वे दफ़न किए जा चुके हैं, अतः एंटीओकस की ऐतिहासिक गवाही मिलरवादी समझ के अनुरूप तो है, परन्तु 'पंक्ति पर पंक्ति' अनुप्रयोग को शासित करने वाले नियमों के अधीन है। इन पदों में पापसत्ता की अन्तिम प्रतिनिधि शक्ति डोनाल्ड ट्रम्प है, यद्यपि ऐतिहासिक रूप से एंटीओकस तीनों युद्धों में उपस्थित था। पद तेरह की पूर्ति के लिए ट्रम्प को दूसरा चुनाव हारना पड़ा, क्योंकि पद तेरह में वह 'लौटता' है, पहले से कहीं अधिक सबल होकर, इतना सबल कि कान के आर-पार जाने वाली गोली भी सह

सकें; और वही कान, दाहिने हाथ के अँगूठे तथा दाहिने पैर के बड़े अँगूठे के साथ, वे अंग थे जिन्हें याजकों के अभिषेक के समय रक्त से अभिषिक्त किया जाना था।

रीगन ट्रम्प की पूर्वछाया थे, क्योंकि वे 1989 में आरम्भ हुए अन्तकाल से गिने जाने वाले अन्तिम आठ राष्ट्रपतियों में प्रथम हैं। लिंकन ट्रम्प की पूर्वछाया थे, क्योंकि वे प्रथम रिपब्लिकन राष्ट्रपति थे। लिंकन की हत्या दासत्व-समर्थक डेमोक्रेटों ने रोम के साथ गठबंधन में की, और रोनाल्ड रीगन तथा उनके पोपवादी समकक्ष, जॉन पॉल द्वितीय, दोनों ही हत्या के प्रयासों से जीवित बचे। 2020 में चुराए गए चुनाव के माध्यम से ट्रम्प का राजनीतिक वध हुआ, जो प्रकाशितवाक्य ग्यारह, पद सात की पूर्ति था, और फिर 2024 में वह पद ग्यारह की पूर्ति में पुनरुत्थित हुआ।

और जब वे अपनी गवाही पूरी कर लेंगे, तो वह पशु जो अथाह कुण्ड से ऊपर निकलता है, उनके विरुद्ध युद्ध करेगा, और उन पर जय पाएगा, और उन्हें मार डालेगा। ... और तीन दिन और आधे के बाद, परमेश्वर की ओर से जीवन की आत्मा उन में समा गई, और वे अपने पाँवों पर खड़े हो गए; और जो उन्हें देखते थे, उन पर बड़ा भय छा गया। प्रकाशितवाक्य 11:7, 11.

ट्रम्प का पुनरुत्थान, पद तेरह में उल्लिखित उसके 'लौटने' ही था, और इसने रोम की एक विशेषता का भी सादृश्य प्रस्तुत किया; क्योंकि रोम 'सात में से जो आठवाँ है', और ट्रम्प रोम का प्रतिरूप है।

और वह पशु जो था, और नहीं है, वही आठवाँ है, और सातों में से है, और विनाश में जाता है। प्रकाशितवाक्य 17:11.

ट्रम्प का दूसरा कार्यकाल उसे रीगन के बाद से आठवाँ राष्ट्रपति बनाता है; और क्योंकि वह छठा भी था, ट्रम्प, पोपतंत्र के अनुरूप, "आठवाँ, जो सात में से है" है। आठ पुनरुत्थान का प्रतीक है, जो इस बात को रेखांकित करता है कि वह, पोपतंत्र के प्रतिरूप के रूप में, "लौटने" के लिए एक ऐसा घातक घाव होना आवश्यक था जो चंगा हो चुका हो।

और मैंने देखा कि उसके सिरों में से एक मानो मरणांतक रूप से घायल हुआ था; और उसकी घातक चोट भर गई; और समस्त जगत उस पशु के पीछे अचंभित होकर चल पड़ा। प्रकाशितवाक्य 13:3.

जब घातक घाव चंगा होता है, तब संसार "पशु के पीछे चकित होकर चलता है," और जब 2024 में ट्रम्प "आठवाँ, जो सात में से है" के रूप में पुनरुत्थित हुआ, तो वह "लौट आया" और समस्त संसार उसके पीछे चकित होकर चला।

और साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन की आत्मा उनमें प्रविष्ट हुई, और वे अपने पाँवों पर खड़े हो गए; और जिन्होंने उन्हें देखा, उन पर बड़ा भय छा गया। और उन्होंने स्वर्ग से एक बड़ा शब्द सुना, जो उनसे कह रहा था, यहां ऊपर आओ। और वे बादल में स्वर्ग पर चढ़ गए; और उनके शत्रुओं ने उन्हें देखा। प्रकाशितवाक्य 11:11, 12.

ट्रम्प 2024 के चुनाव में "लौटे", और फिर 2025 में वह और पोप लियो—दोनों का शपथग्रहण हुआ। यीशु ने जो देखने की इच्छा रखते थे, उन सबको प्रत्यक्ष और न्यायोचित चेतावनी दी।

इसलिए जब तुम उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को, जिसके विषय में भविष्यद्वक्ता दानिय्येल ने कहा, पवित्र स्थान में खड़ी देखोगे, (जो पढ़े, वह समझे.) मत्ती 24:15.

मरकुस इसे संभवतः कुछ अधिक स्पष्ट रूप से कहता है।

परन्तु जब तुम उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को, जिसका उल्लेख भविष्यद्वक्ता दानिय्येल ने किया है, वहाँ खड़ी हुई देखोगे जहाँ उसे नहीं होना चाहिए, (जो पढ़ता है, वह समझे,) तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों की ओर भाग जाएँ। मरकुस 13:14.

रोम अपने तीनों चरणों में 'उजाड़ की घृणास्पद वस्तु' है। मूर्तिपूजक रोम, पोपतांत्रिक रोम और आधुनिक रोम—इनमें से प्रत्येक—परमेश्वर की प्रजा के लिए चेतावनी का प्रतीक है। यह चेतावनी तब पहचानी जानी है जब रोम 'पवित्र

स्थान' में हो, या जहाँ 'उसे नहीं होना चाहिए' वहाँ उपस्थित हो। 'महिमामय देश' पवित्र शास्त्र में पवित्र भूमि है, और संयुक्त राज्य अमेरिका आत्मिक महिमामय देश है।

और यहोवा पवित्र देश में यहूदा को, जो उसका भाग है, अपनी विरासत के रूप में प्राप्त करेगा, और वह पुनः यरूशलेम को चुन लेगा। हे समस्त प्राणी, यहोवा के सम्मुख मौन रहो; क्योंकि वह अपने पवित्र निवासस्थान से उठ खड़ा हुआ है। जकर्याह 2:12, 13.

जब आप रोम को पवित्र स्थान में स्थापित देखें, तब प्रभु यरूशलेम को अपनी वाचा-प्रजा के रूप में अंतिम बार चुन रहे होंगे। जब रीगन, आठ राष्ट्रपतियों में प्रथम, ने बाइबिल की भविष्यवाणी के मसीह-विरोधी के साथ एक गुप्त संधि की, तो वह 1989 में अंत के समय से गिने गए आठवें और अंतिम राष्ट्रपति द्वारा रोम के साथ एक खुले गठबंधन का प्रतिनिधित्व करता था। ओमेगा प्रतीक प्रायः अल्फा प्रतीक के गुणों को उलट देते हैं।

2025 में पोप लियो और ट्रम्प का पदाभिषेक, प्रकाशितवाक्य अध्याय तेरह के समुद्र के पशु और पृथ्वी के पशु के बीच एक खुले संबंध को दर्शाता है। रेगन और जॉन पॉल द्वितीय की गुप्त संधि द्वारा प्रतिरूपित ट्रम्प और लियो के खुले गठबंधन की यह पलटाव हमें यह सूचित करता है कि 200 ईसा पूर्व पद चौदह की पूर्ति करने वाले उस मिस्र के बाल-राजा का समर्थन, अन्तिम दिनों में समर्थन के अभाव का द्योतक है।

2025 बाह्य आधारभूत दर्शन अथवा भविष्यवाणी की स्थापना करता है, क्योंकि यह रोम को उस चेतावनी के रूप में प्रतिष्ठित करता है जो रोम से संबंधित है और जिसे दानियेल ने "उजाड़ने वाली घृणित वस्तु" के प्रतीकवाद द्वारा अभिहित किया है। "उजाड़" द्वारा निरूपित विनाश से पूर्व "उजाड़ने वाली घृणित वस्तु" की चेतावनी घटित होती है। सेस्टियस के अधीन यरूशलेम की घेराबंदी में यह चेतावनी इस प्रकार व्यक्त हुई कि रोमी अधिकार के ध्वज पवित्रस्थान के पावन प्रांगणों के भीतर स्थापित कर दिए गए। जिन्होंने इसे देखा, समझा, आज्ञापालन किया और नगर से निकल गए, घेराबंदी के पुनः प्रारंभ होने पर वे सुरक्षित रहे। उन्होंने रोमी चेतावनी-चिह्न देखा। पर्गमुस की समझौता-ग्रस्त कलीसिया से, और तत्पश्चात् थुआतीरा की कलीसिया से, अलग हुए मसीही, जब उन्होंने पाप के मनुष्य को परमेश्वर के मन्दिर में बैठा हुआ देखा, तो वे वन-प्रदेश में भाग गए। वे साक्षी, अंत के दिनों में दानियेल द्वारा कही गई "उजाड़ने वाली घृणित वस्तु" की चेतावनी की पहचान ठहरते हैं।

हमने बार-बार दिखाया है कि सन 1888 सेस्टियस की घेराबंदी के तुल्य था, और रविवार कानून के संकट का निष्कर्ष टाइटस की घेराबंदी के तुल्य है। 1880 के दशक के ब्लेयर रविवार कानून विधेयक, तथा उसी दशक में कुछ दक्षिणी राज्यों में लागू किए गए रविवार कानून, सेस्टियस की चेतावनी थे; और इन्हीं ने ग्रामीण निवास के विषय में सिस्टर वाइट के परामर्श पर एक विभाजन-रेखा भी अंकित की। 1880 के दशक से पहले उनका परामर्श यह था कि भविष्य में हमें ग्रामीण क्षेत्र में जाना पड़ेगा, पर 1880 के दशक के बाद ग्रामीण निवास वह बात हो गई जो तब तक पहले ही संपन्न कर ली जानी चाहिए थी। 1880 के दशक में चर्चित और पापाई सत्ता के अधिकार-चिह्न को बढ़ावा देने वाले ब्लेयर विधेयकों का यह चेतावनी-चिह्न 9/11 के समय पैट्रियट एक्ट का प्रतिरूप था, क्योंकि प्रकाशितवाक्य अठारह का स्वर्गदूत उन दोनों इतिहासों में प्रकट हुआ था।

9/11 इस बात की चेतावनी था कि सेस्टियस अपना अधिकार उस पवित्र स्थान में स्थापित कर रहा है जहाँ उसे नहीं होना चाहिए, क्योंकि 9/11 के समय रोमी विधि ने अंग्रेज़ी विधि का स्थान ले लिया। 2021 के पेलोसी ट्रायल्स में ड्यू प्रोसेस क्लॉज़ को अस्वीकृत किया गया, और यह टाइटस की घेराबंदी की ओर एक और कदम का प्रतिनिधित्व करता है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में शीघ्र आने वाले रविवार के कानून पर आकर समाप्त होती है। यह घेराबंदी एक कालावधि है। 1888 आन्तरिक प्रोटेस्टेंट सींग के विद्रोह से सम्बन्धित है, और 9/11 बाह्य रिपब्लिकन सींग के विद्रोह से सम्बन्धित है। उसी वर्ष सुन्दर देश से पोप का पदग्रहण, जिसमें अन्तिम राष्ट्रपति का भी पदग्रहण होता है, जहाँ उसे नहीं होना चाहिए वहाँ खड़ी उजाड़नेवाली घृणित वस्तु की अन्तिम चेतावनी का प्रतिनिधित्व करता है, ठीक पनियम के युद्ध से पहले। पनियम का युद्ध सीधे रविवार के कानून और एक्टियम के युद्ध में ले जाता है, जिसने मूर्तिपूजक रोम के लिए तीसरी और अन्तिम बाधा का प्रतिनिधित्व किया, और तब मूर्तिपूजक रोम ने दानियेल 11:24 की पूर्ति में 360

वर्षों तक सर्वोच्च रूप से राज्य किया। रविवार के क्रानून पर रोम छूटे और सातवें दोनों राज्यों को विजित कर लेता है, और आधुनिक रोम तब एक सांकेतिक घड़ी, अर्थात् बयालिस सांकेतिक महीनों तक राज्य करता है।

पद सोलह में, पॉम्पी—जिसने अभी-अभी मूर्तिपूजक रोम की पहली बाधा, सीरिया, को जीत लिया था—फिर यरूशलेम को जीतता है। पॉम्पी रोम की पहली दो बाधाओं को परास्त करता है, और तीसरी बाधा को ऑगस्टस कैसर एक्टियम में जीतता है। आधुनिक रोम, पद चालीस की पूर्ति में और जैसा कि पद दस में प्रतिरूपित है, 1989 में पहले 'दक्षिण के राजा' को परास्त करता है। तत्पश्चात्, रविवार के क्रानून के समय, आधुनिक रोम अपनी दूसरी और तीसरी बाधा—संयुक्त राज्य, और फिर संयुक्त राष्ट्र—को परास्त करता है, और संयुक्त राष्ट्र तत्क्षण अपना राज्य पापाई सत्ता को देने पर सहमत हो जाता है। मूर्तिपूजक रोम ने पॉम्पी के द्वारा पहले दो को, और उसके बाद एक को, परास्त किया; और पापाई रोम ने 1989 में एक को परास्त किया, और फिर अपनी अगली दो बाधाओं को पद सोलह में—जहाँ पॉम्पी अपनी दूसरी विजय के साथ चिह्नित है—परास्त किया।

चाहे मूर्तिपूजक रोम के लिए एक्टियम में तीसरी बाधा रही हो, या वह तीसरी बाधा जो सन् 538 में रोम नगर से गोथों के निष्कासन द्वारा निरूपित हुई—जब रोम उस तीसरी बाधा पर जय प्राप्त कर लेता है, तब वह सर्वोच्च अधिकार से शासन करता है।

निश्चय ही प्रभु यहोवा कुछ नहीं करता, जब तक वह अपना भेद अपने दास भविष्यद्वक्ताओं पर प्रकट न करे।  
आमोस 3:7.

प्रभु निश्चय ही उजाड़ आने से पूर्व उस चेतावनी-चिह्न का अंतिम प्राकट्य देगा, जिसे दानियेल की पुस्तक में 'उजाड़ने वाली घृणित वस्तु' के रूप में निरूपित किया गया है। वह चेतावनी-चिह्न खुला गठबंधन है, जो 2025 में निरूपित रीगन के गुप्त गठबंधन के विपरीत है। प्रभु पहले चेतावनी दिए बिना दण्ड नहीं लाएगा, और आमोस इस बात में अत्यन्त स्पष्ट है कि अपने दासों को दिया गया गूढ़ प्रकाशन क्या है, और वह किसे सम्बोधित है।

हे इस्राएल के पुत्रो, वह वचन सुनो जो यहोवा ने तुम्हारे विरुद्ध, और उस समस्त कुल के विरुद्ध, कहा है, जिसे मैं मिस्र देश से निकाल लाया: पृथ्वी के सब कुलों में से मैंने केवल तुम्हीं को जाना है; इस कारण मैं तुम्हारे सब अधर्मों के लिए तुम को दण्ड दूंगा। आमोस 3:1, 2.

आमोस परमेश्वर की चुनी हुई वाचा-जनता की उस अंतिम पीढ़ी को संबोधित कर रहा है जिन्हें दंडित किया जाना है; यह यहजेकेल अध्याय आठ में सूर्य को प्रणाम करने वाले पच्चीस पुरुषों के अनुरूप है। आमोस लाओदिकीय संदेश प्रस्तुत कर रहा है, जो जीवितों के न्याय के समय पाप के मिटाए जाने के काल में तीसरे स्वर्गदूत का संदेश है। आमोस की चेतावनी दो पक्षों के एकीकरण पर आधारित है।

क्या दो जन, बिना परस्पर सहमत हुए, साथ-साथ चल सकते हैं? क्या सिंह वन में गरजेगा, जब उसके पास शिकार न हो? क्या सिंह-शावक अपनी मांद से गरजेगा, यदि उसने कुछ नहीं पकड़ा? क्या कोई पक्षी पृथ्वी पर फंदे में गिरेगा, जहाँ उसके लिए कोई जाल न बिछा हो? क्या कोई पृथ्वी से फंदा उठा लेगा, जब उसमें कुछ भी न फँसा हो? क्या नगर में नरसिंगा फूँका जाएगा, और लोग न डरेंगे? क्या किसी नगर में विपत्ति होगी, और यहोवा ने उसे न किया हो? आमोस 3:3-6.

दो जनों के एक होकर साथ चलने के विषय में दी गई चेतावनी, पृथ्वी से एक पक्षी को पकड़ लेने वाले फंदे के संदर्भ में प्रस्तुत की गई है। पक्षी धार्मिक निकायों के प्रतीक हैं, और प्रकाशितवाक्य में पापसी को हर प्रकार के अशुद्ध और घृणित पक्षियों का पिंजरा बताया गया है।

और उसने प्रबल, ऊँचे स्वर में पुकारकर कहा, "महान बाबुल गिर पड़ा है, गिर पड़ा है, और दुष्टात्माओं का निवासस्थान बन गया है, और हर एक अशुद्ध आत्मा का आश्रय-स्थान, और हर एक अशुद्ध और घृणित पक्षी का पिंजरा। क्योंकि सब जातियों ने उसके व्यभिचार के प्रकोप की मदिरा पी है, और पृथ्वी के राजाओं ने उसके साथ व्यभिचार किया है, और पृथ्वी के व्यापारी उसकी विलासिताओं की बहुतायत से धनी हो गए हैं।" प्रकाशितवाक्य

18:2, 3.

पिंजरे में बंद पक्षी एक बंदी पक्षी है, और जब कोई राष्ट्र रोम की वेश्या के साथ व्यभिचार करता है तो वह एक बंदी पक्षी बन जाता है; और वह पक्षी जो शेष सभी भविष्यवाणी-संबंधी पक्षियों से ऊपर उठाया जाता है, वही वह शक्ति है जिसका त्रिविध भवन उसके स्थान पर—जो शिनार है, जो बाबुल है—रविवार के क़ानून के समय निर्मित और स्थापित होता है। वही वह पक्षी है जिसे 1798 में घातक घाव लगा, अथवा जैसा जकर्याह कहता है, जिसकी टोकरी पर सीसे का ढक्कन रखा गया; परन्तु उसके बाद आत्मवाद और पतित प्रोटेस्टेंटवाद के पक्षियों द्वारा उसे ऊपर उठा लिया गया।

तब वह स्वर्गदूत जो मुझ से बातें कर रहा था, आगे बढ़ा और मुझ से कहा, अब अपनी आँखें उठाकर देख, यह क्या है जो निकल रहा है। मैंने कहा, यह क्या है? उसने कहा, यह एक एपा है जो निकल रहा है। फिर उसने कहा, यह सारी पृथ्वी में उनका स्वरूप है। और देखो, सीसे का एक तलन्त उठाया गया; और यह एक स्त्री है जो एपा के बीच बैठी है। उसने कहा, यह दुष्टता है। तब उसने उसे एपा के बीच में डाल दिया; और उसके मुँह पर सीसे का भार रख दिया। तब मैंने अपनी आँखें उठाई और देखा, कि दो स्त्रियाँ निकलीं, और उनके पंखों में हवा थी; क्योंकि उनके पंख सारस के पंखों के समान थे; और उन्होंने एपा को पृथ्वी और आकाश के बीच उठा लिया। तब मैंने उस स्वर्गदूत से जो मुझ से बातें कर रहा था, पूछा, ये एपा को कहाँ ले जा रही हैं? उसने मुझ से कहा, शिनार देश में उसके लिए एक घर बनाने को; और जब वह स्थापित हो जाएगा, तब उसे वहाँ उसके अपने आधार पर रखा जाएगा। जकर्याह 5:5-11.

आमोस का फंदा धरती का पक्षी पकड़ लेता है, क्योंकि वह उस गठबंधन का प्रतीक है जो शीघ्र आने वाले रविवार के अधिनियम का पूर्ववर्ती है, जिसमें धरती का पक्षी पकड़ा जाता है; और आमोस के अनुसार वह गठबंधन लाओदिकियाई सप्तम-दिवसीय एडवेंटवाद के लिये एक ताड़ना है, क्योंकि नगर में चेतावनी की तुरही फूँकी जाएगी, जिसे वे सुनने से इन्कार करेंगे.

क्या नगर में नरसिंगा फूँका जाए, और लोग न भयभीत हों? क्या नगर में विपत्ति हो, और यहोवा ने उसे न किया हो? निश्चय ही प्रभु यहोवा कोई कार्य नहीं करता, जब तक वह अपना भेद अपने दास भविष्यद्वक्ताओं को प्रकट न कर दे। सिंह गरजा है—कौन न डरेगा? प्रभु यहोवा ने कहा है—कौन भविष्यद्वानी करने से रह सकेगा? आमोस 3:6-8.

जो सिंह गरजता है, वह यहूदा के गोत्र का सिंह है, जो तब मसीह का प्रतिनिधित्व करता है जब वह अपने भविष्यवाणी-वचन पर मुहर लगाता और उसे खोलता है। सन् 2025 का खुला गठबंधन केस्टियस की घेराबंदी है, और जब तुम उन दो को साथ-साथ चलते देखते हो जिन्हें कभी सह-अस्तित्व में नहीं होना चाहिए, तब परमेश्वर की प्रजा के लुटेरों का प्रतीक स्थापित होता है। प्रोटेस्टेंटों के साथ रोम का गठबंधन और संरक्षण एक विरुद्धाभास है, क्योंकि प्रोटेस्टेंट होना ही रोम के विरुद्ध विरोध करना है।

हम इन बातों को अगले लेख में जारी रखेंगे।

फंदे से बच निकलने में बहुत देर हो चुकी है

“और यह स्मरण रखा जाए कि रोम का यही अभिमान है कि वह कभी नहीं बदलती। ग्रेगरी VII और इनोसेंट III के सिद्धांत आज भी रोमन कैथोलिक कलीसिया के सिद्धांत हैं। और यदि उसके पास केवल शक्ति होती, तो वह उन्हें उतने ही प्रबल बल के साथ अब भी व्यवहार में लाती, जितने के साथ बीती हुई शताब्दियों में लाई थी। प्रोटेस्टेंट लोग बहुत कम जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं, जब वे रविवार के उत्कर्ष के कार्य में रोम की सहायता स्वीकार करने का प्रस्ताव रखते हैं। जबकि वे अपने उद्देश्य की पूर्ति पर तुले हुए हैं, रोम अपनी शक्ति को पुनर्स्थापित करने, अपने खोए हुए प्रभुत्व को फिर से प्राप्त करने का लक्ष्य साधे हुए है। संयुक्त राज्य में यदि एक बार यह सिद्धांत स्थापित हो जाए कि कलीसिया राज्य की शक्ति का उपयोग कर सकती है या उसे नियंत्रित कर सकती है; कि धार्मिक आचरणों को लौकिक विधियों द्वारा लागू कराया जा सकता है; संक्षेप में, कि कलीसिया

और राज्य का अधिकार अंतःकरण पर प्रभुत्व करे, तो इस देश में रोम की विजय सुनिश्चित है।”

ईश्वर के वचन ने आसन्न खतरे की चेतावनी दे दी है; यदि इसे अनसुना कर दिया गया, तो प्रोटेस्टेंट जगत को रोम के वास्तविक उद्देश्यों का पता तभी चलेगा जब फंदे से बच निकलना बहुत देर हो चुका होगा। वह चुपचाप शक्ति हासिल कर रही है। उसके सिद्धांत विधायी सभागृहों में, चर्चों में और मनुष्यों के हृदयों में अपना प्रभाव डाल रहे हैं। वह अपने ऊँचे और विशाल भवन खड़े करती जा रही है, जिनके गुप्त कक्षों में उसके पूर्व उत्पीड़नों की पुनरावृत्ति होगी। गुप्त रूप से और बिना संदेह उत्पन्न किए वह अपनी शक्तियों को मजबूत कर रही है, ताकि जब उसके प्रहार का समय आए, वह अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सके। उसे केवल अनुकूल स्थिति चाहिए, और वह उसे पहले से ही मिल रही है। हम शीघ्र ही देखेंगे और महसूस करेंगे कि रोमन तत्व का उद्देश्य क्या है। जो कोई भी ईश्वर के वचन पर विश्वास करेगा और उसका पालन करेगा, उसी कारण उसे निंदा और उत्पीड़न का सामना करना पड़ेगा। द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी, 581.

"एक संसार दुष्टता, छल और भ्रम में पड़ा है, मृत्यु की छाया में—सोया हुआ, सोया हुआ। कौन है जो उन्हें जगाने के लिए आत्मिक पीड़ा महसूस कर रहा है? कौन-सी आवाज़ उन तक पहुँच सकती है? मेरा मन भविष्य की ओर चला जाता है, जब यह संकेत दिया जाएगा, 'देखो, दूल्हा आ रहा है; उससे मिलने के लिए बाहर निकलो।' परन्तु कुछ लोग अपने दीयों को फिर से भरने के लिए तेल लेने में देर कर देंगे, और बहुत देर से उन्हें पता चलेगा कि तेल द्वारा जिसका प्रतिनिधित्व किया गया है—वह चरित्र—हस्तांतरित नहीं किया जा सकता। वह तेल मसीह की धार्मिकता है। वह चरित्र का प्रतीक है, और चरित्र हस्तांतरित नहीं किया जा सकता। कोई व्यक्ति इसे किसी और के लिए प्राप्त नहीं कर सकता। हर एक को अपने लिए ऐसा चरित्र प्राप्त करना होगा जो पाप के हर दाग से शुद्ध किया गया हो।" बाइबल इको, 4 मई, 1896.

"जब मैंने वर्तमान सत्य के अभाव में मरती हुईं दीन आत्माओं को देखा, और यह भी देखा कि कुछ लोग, जो सत्य पर विश्वास करने का दावा करते थे, परमेश्वर का कार्य आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक साधन रोककर उन्हें मरने दे रहे थे, तब वह दृश्य अत्यन्त वेदनादायक था, और मैंने स्वर्गदूत से इसे मुझसे दूर करने की विनती की। मैंने देखा कि जब परमेश्वर के कार्य ने उनकी कुछ संपत्ति की मांग की, तो वे उस युवक के समान, जो यीशु के पास आया था (मत्ती 19:16-22), शोकित होकर चले जाते थे; और यह भी कि शीघ्र ही उमड़ती हुई विपत्ति ऊपर से होकर गुज़रेगी और उनकी सारी संपत्ति को बहा ले जाएगी, और तब सांसारिक संपत्ति का बलिदान कर स्वर्ग में धन संचित करना अत्यन्त देर हो चुकी होगी।" Early Writings, 49.

"यहूदा ने देखा कि उसकी विनतियाँ व्यर्थ थीं, और वह पुकारता हुआ सभागार से बाहर भागा, 'अब बहुत देर हो चुकी है! अब बहुत देर हो चुकी है!' उसे अनुभव हुआ कि वह यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाते देखकर जीवित नहीं रह सकेगा, और निराशा में बाहर जाकर उसने फाँसी लगा ली।" The Desire of Ages, 722.